

हरमहेन्द्र सिंह बेदी जी के काव्य में समाज और मनोजगत

शिल्पा भाटिया

शोधार्थी (हिन्दी विभाग)

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
धौलाधार परिसर-एक, धर्मशाला, जिला-काँगड़ा, हि.प्र.-176215

शोध-सार:-

साहित्य को समाज का आयना माना गया है। जब भी मनुष्य की भावनाओं का सैलाब उठा है, उसने कविता की शरण में ही सुकून पाया है। कविता आज से नहीं बल्कि आदिकाल से लिखी और पढ़ी जा रही है। हर देश और काल में काव्य की प्रासंगिकता रहती है। जैसे-जैसे समाज में परिवर्तन होता रहा, कविता का विषय भी समय और परिस्थिति के अनुसार बदलता रहा। समकालीन हिन्दी कविता में समाज में संचित प्रामाणिक और व्यवहारिक जीवनानुभूतियों का सच व्यक्त हुआ है। कवि समाज में जो कुछ देखता है और जिन परिस्थितियों को अनुभव करता है, उन विचारों को अपनी कविता के माध्यम से सामने रखता है। “कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-संबंधों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भाव-भूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है।”¹

बीज शब्द - समाज, मनोजगत, विचार, कविता, अनुभूति, समकालीन, समस्या आदि।

प्रस्तावना-

डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी जी समकालीन कविता के कवि हैं। किसी भी कवि की अनुभूति और वैचारिक दृष्टि बहुत पहले से जीवन की परिस्थितियों से प्रभावित रहती है, जिससे वर्तमान का निर्धारण होता है। जो की रचना करते समय रचना की बुनावट में अपनी भूमिका रखती है। बेदी जी ने अपने काव्य में जीवन के प्रति दृष्टिकोण और मनोजगत को अदभुत तरीके से सामने रखा है। इनकी कविताओं में ‘समाजिक चेतना’ का जीवन्त प्रवाह दिखाई पड़ता है। समाजिक चेतना समाज सापेक्ष लोकोन्मुख जीवन दृष्टि है। समाजिक चेतना के द्वारा मनुष्य जीवन एवं समाज के भूतकाल, वर्तमान और भविष्यकाल के पतन और विकास की सभी आवस्थाओं और सम्भावनाओं का ज्ञान होता है। समाजिक चेतना किसी जाति, देश और विश्व के अस्तित्व का मूल आधार है, जिसका मुख्य उद्देश्य लोक कल्याण है। बेदी जी ने अपना साहित्यिक करियर अस्सी के दशक में शुरू किया। इनका जीवन प्रसिद्ध विचारकों तथा क्रांतिकारी लेखकों से प्रभावित था, जिसका प्रभाव इनके काव्य में देखा जा सकता है। बेदी जी की कविताओं में अस्सी के दशक की समस्याओं से लेकर इक्कीसवीं सदी के कोरोना काल में समाज की समस्याओं को दर्शाया गया है। साथ ही साथ मनुष्य के मन में चल रहे विचारों को चित्रित करने का प्रयास किया गया है।

विषय वस्तु: डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी जी के काव्य में समाजिक और मनोजगत चेतना को देखा जा सकता है। कवि ने समाज के बाहरी समस्याओं के साथ मनुष्य के भीतर चल रहे विचारों की गति को भी शब्दों में पिरो कर कविता में स्थान दिया। ‘चेतना’ मनुष्य को जीवित होने का एहसास करवाती है। चेतना की शक्ति को विचारशक्ति कहा जाता है। चेतना के कारण मनुष्य को जीवित समझा जाता है, चेतनाहीन मनुष्य मृत के समान है। दूसरे शब्दों में कहें तो चेतना जीवित जीवों में रहने वाला वो तत्व है जो उनको निर्जीव पदार्थों से अलग बनाती है।

“मनोविज्ञान की दृष्टि से चेतना मानव में उपस्थित वह तत्व है जिसके कारण उसे सभी प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं। चेतना के कारण ही हम देखते, सुनते, समझते और अनेक विषयों पर चिंतन करते हैं। इसी के कारण हमें सुख-दुःख की अनुभूति होती है। और हम इसी के कारण अनेक प्रकार के निश्चय करते हैं तथा अनेक प्रदार्थों की प्राप्ति के लिए चेष्टा करते हैं। चेतना एक बौद्धिक शक्ति है जो उस समय महत्वपूर्ण एवं ललित निर्णय लेने में मनुष्य की सहायता करती है जब वो पूरी तरह से मन के अधीन होकर गलत और सही में विभेद करने में असहज अनुभव करने लगता है।”² समाजिक चेतना निरन्तर गतिमान रहती है। समाज में जो परिस्थिति आज है, कल को अलग समस्या के रूप में सामने आ सकती है। इसलिए समाजिक चेतना का स्थिर रहना असम्भव है। बेदी जी ने अस्सी के दशक के लेखक हैं, लेकिन इक्कीसवीं सदी तक आते-आते उनकी समाजिक चेतना में परिवर्तन होते रहे। बदलते समय के साथ कवि की समाजिक और आंतरिक विचारधारा को केन्द्रित करके विश्लेषित करने का प्रयास किया जाता है। अंतर्मन का विश्लेषण कवि के भीतरी विश्व, उनके विचारों, भावनाओं और अनुभवों का अध्ययन किया जाता है। कवि अपने जीवन के अनुभवों और घटनाओं को कविता में प्रतिबिम्बित करता है। डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी जी उस नदी की तरह हैं, जो नदी स्वयं भीग कर, धरती, पेड़-पौधों और तटों को भीगों सकने का कार्य कर सकती है। और जिस प्रकार कुम्हार के हाथों से बने घड़े पर उसके हाथों की छाप को मिटाया नहीं जा सकता, उसी तरह कवि का आत्मपक्ष किसी न किसी रूप में कविता में झलकता ही है। ‘मौन का उपवास’ कविता में बेदी जी द्वारा मनुष्य की मनोदशा को समझने का प्रयास किया है।

“कौन कहाँ अकेला \किसको पता।

\भटकन का उपहार \मौन का उपवास

कैसे मिला \किसको पता \साधना का उपदेश

कब कहाँ मिला \वह ही जानता।”³

इन पंक्तियों में मनुष्य की मनोदशा या आंतरिक दशा को समझने का प्रयास किया गया है। कि मनुष्य के भीतर लगातार विचारों का प्रवाह चलता है, उन विचारों का मथन करने से नया विचार या दृष्टि सामने आती है। जिसको आध्यात्मिकता या बुद्धि से जोड़ सकते हैं। कोई नहीं जानता ये विचार कब, कहाँ किस रूप में प्रकट हो कर हमारा मार्गदर्शन करें। इसी प्रकार मुक्तिबोध की कविताओं में देखा जाए तो वहाँ भी मनुष्य आत्मसाक्षात्कार करता दिखाई पड़ता है। लगातार खुद को खोजने का प्रयास करता है। ‘अँधेरे में’ कविता इसका उदाहरण है।

“खोजता हूँ पठार ..पहाड़..समुन्द्र

जहाँ मिल सकें मुझे/ मेरी खोई हुई

परम अभिव्यक्ति अनिवार/आत्म-संभवा।”⁴

मुक्तिबोध की कविता में भी बेदी जी कविताओं के समान विचारों की उथल-पुथल में आत्मसाक्षात्कार करने का प्रयास निरन्तर चलता रहता है। हर समय व्यक्ति अपने अस्तित्व की खोज में भटक रहा है। जिस भटकन के कारण लगातार विचार चल रहे हैं। आत्मसाक्षात्कार होने पर

जो बेदी जी ने महसूस किया उसको अपनी कविता 'वे रंग'में इस तरह से व्यक्त किया है -

“इनके पास कहां

वे रंग /रंगहीन तमाशे के सब मदारी

रंगों का जादू पास तेरे /फिर तू क्यों उदास

सात नहीं सात हजार रंगों की दुनिया/तेरे आस पास ”

इन पंक्तियों को बाहरी और आंतरिक जगत दोनों तरह से समझा जा सकता है। अंतर्जगत से देखा जाए तो माया के बंधन से दर होकर जिसने आत्मसाक्षात्कार किया है, उसके लिए दुनिया के रंगों से ज्यादा आंतरिक जगत के रंग हैं। दूसरी और बाहरी जगत की बात की जाए तो जीवन से हारे हुए व्यक्ति का उत्साहवर्धन करते हुए उसकी क्षमताओं का एहसास करवाने का प्रयास किया गया है। कि किस प्रकार उसमें अथाह सम्भावनाएं हैं, किसी एक जगह से असफलता मिलने पर जीवन के अन्य रास्तों की तरफ अग्रसर होना चाहिए। अपनी एक अन्य कविता 'अंतर्वीणा का प्रहार'में भी अंतर्जगत की बात की है -“खण्ड -खण्ड सत्य टूटा /बूंद बूंद हुआ लहराता समुद्रविराट प्रतिष्ठा अवरिल क्षण की /ध्वनि -सुगन्धित अंतर्वीणा की।” इसी तरह से अंतर जगत का दृश्य या अंतर्जगत में उठने वाले संगीत की मधुर ध्वनि को 'आसध्य वीणा'कविता के माध्यम से सामने रखा है। बेदी जी ने अपनी कविताओं में समाज के उस कड़वे सच को भी दर्शाया है, जहाँ भौतिकवाद के दौर में रिश्तों का कोई मोल नहीं रहा। अपनी कविता 'उदास है बुजुर्ग'में अकेले रहने वाले बूढ़े लोगों की जिन्दगी को दर्शाया है। वे लिखते हैं -

“दिल्ली में /बूढ़े उदास हैं

अकेले हैं /भयभीत हैं /चुप हैं

पार्क में भी खामोशी/प्रतीक्षा से रहित

संत्रास भोगते हुए /खुद में समाए/बैठे हैं चिंता में।”

बेदी जी ने बुजुर्गों की मानसिक /दयनीय स्थिति को समाज के सामने कविता के माध्यम से रखा है। कामकाजी जीवन की व्यस्तता के कारण युवा वर्ग काम में उलझा रहता है, और अपने बड़े माँ-बाप को समय नहीं दे पाते। जिसके कारण बुजुर्ग अपनी मानसिक पीड़ा को अकेले झेलते हैं। कवि ने भौतिक बस्तुओं की भाग-दौड़ में व्यस्त मनुष्य की स्थिति को समझाते हुए कहा है। कि किस प्रकार व्यक्ति रोटी के लिए इतनी मेहनत करता है, लेकिन भौतिक युग में इस तरह फंस चुका है कि उसको कहीं शांति नहीं है। बहुत बेचैन हो चुका है व्यक्ति न तो उसके पास मन की शांति रही है और न ही तन की। 'मिटटी और आदमी'कविता में लिखते हैं

“ मिट्टी से गेहूं /गेहूं से आटा /आटे से भूख /भूख से आदमी /

और भूखा है आदमी /मिट्टी से लोहा /लोह से स्टील /

स्टील से कारखाना /कारखाने से बेकारी /

और बेकार है आदमी /मिट्टी से तन /

तन के भीतर मन /मन से तन /

तन से मन नहीं जुड़ता /बहुत बेचैन है आदमी। ”

'प्राणी का सत्य' कविता में कवि ने मनुष्य की कोरोना काल की स्थिति को अपनी कविता में उस समय के दर्द और व्यक्ति की मानसिक स्थिति को दर्शाया है।

“कहीं मत जाओ /देश जागा है या सोया

सभी डरे हुए /कुछ नहीं करते। बात भी नहीं /हंसते भी नहीं ”

लोकडाउन में मनुष्य ने बहुत से कष्टों को सहा है, बहुत लोगों ने अपनों को खोया, किसी ने रोजगार खोया तो किसी ने जिन्दगी खोई। लेकिन इन सब के बाद भी कवि ने जीने की एक बजह भी कविता

में व्यक्त की है, कि बहुत कुछ खोने के साथ हमने बहुत कुछ पाया भी है। परिवार के साथ समय, रिश्तों की पहचान, अपनों का प्यार और साथ ही खुद को जानने का समय। कवि लिखता है, कि -

“उसे अब पता चला /साठ साल बाद

प्रत्येक कमीज के अंदर/होता है एक अतिरिक्त बटन ”

बेदी जी समाज की हर गतिविधि को देखते और समझते हैं। वे जान रहे हैं कि किस प्रकार से मुखोटे पहन कर आम आदमी को गुमराह किया जा रहा है। उनकी मजबूरियों को आधार बना कर किस प्रकार की राजनीति की जा रही है। राजनीति पर कटाक्ष करते हुए बेदी जी लिखते हैं -

“मौसम का जायजा लेकर /आपको पुराना छाता देंगे/

वे वारिश का इंतजार करेंगे /नहीं होंगी वारिश /

तो सूखे पर भी उनकी नजर है।”

धूमिल की कविताओं में भी राजनीति पर गहरा प्रहार मिलता है। अपनी कविता 'संसद से सड़क तक'में लिखते हैं -“एक आदमी/ रोटी बेलता है/एक आदमी रोटी खाता है /एक तीसरा आदमी भी है /जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है /वह सिर्फ रोटी से खेलता है।”

बेदी जी ने जहाँ समाज की विसंगतियों को सामने रखा है, वहीं दूसरी और समाज में आशा की रोशनी को भी अपनी कविताओं के माध्यम से बिखेरा है। जीवन से हतास व्यक्ति को जीवन जीने का उत्साह पैदा किया है। 'पर्वत शिखर'कविता में वे लिखते हैं -

“देखकर /पहाड़ का शिखर /सोच लिया था

कहाँ तक जाऊँगा रास्ते में

होगा कहां विश्राम /लोटने को मन बना

देह की आत्मा बनी पर्वत

अब छू ही लूँगा/पूरे पहाड़ को आज नहीं तो कल। ”

जिन्दगी में कठिनाई आने पर अपने विश्वास को दृढ़ बनाए रखना। बेदी जी की कविताओं से सीखा जा सकता है। साथ ही बेदी जी ने एक उच्च व्यक्ति की तुलना समुद्र से की है। अपनी कविता में समझाने का प्रयत्न किया है, कि उच्च व्यक्ति के गुण शांत समुद्र के समान हैं। जिस प्रकार समुद्र अपने भीतर अथाह जल, जीव, हारे -मोती आदि को रख कर भी शांत रहता है, ठीक उसी प्रकार जिस व्यक्ति के पास जितना अधिक ज्ञान है वह उतना ही विनम्र रहता है -

“जब मैंने देखा /समुद्र अकेला ही था

जल से परिपूर्ण उफनता हुआ/

कोई नदी नहीं थी वहाँ /जल -दान कर लौट गयी होगी /

अब सुखी होगी नदी/ प्यासी होगी नदी /समुद्र शांत है। ”

बेदी जी अपने काव्य में उत्साह और धैर्य के लिए भी प्रेरित करते हैं। अपनी कविताओं के माध्यम से आशा की किरण लोक कल्याण के लिए बिखेर रहे हैं। उनका काव्य संग्रह 'धुंध में डूबा शहर'की एक कविता 'सतरंगा मौसम'में कवि ने दुःख में हार न मानने को कहा, और साथ ही अंधेरे के बाद आने वाले उजाले का इंतजार करने को कहा। जिस प्रकार पतझड़ के बाद फिर से नए फूल खिलते हैं। कवि लिखते हैं “धैर्य रखो /बीते दिन फिर लौटेंगे /घबराने की बात नहीं /पीले पते झर जायेंगे।” अपनी कविताओं में बेदी जी ने उस मेहनती मजदूर औरत को भी जगह दी है, जो लगातार मेहनत कर रही है। लेकिन उसको कभी उसकी मेहनत के लिए सराहा नहीं जाता, अपने परिवार और अपने पेट भरने के लिए अपनी युवा अवस्था को कुर्बान कर देती है। लेकिन उसकी मेहनत को कभी समझा नहीं जाता। और साथ ही गरीब की मजबूरी को भी दर्शाया है कि किस प्रकार मजबूरी में अपने दूध मुहे बच्चे को भरी धूप में पीठ पर बाँध कर एक माँ मजदूरी कर

रही है I बेदी जी 'वह तोड़ती पथर' कविता में लिखते हैं -

“हर शहर में /मैंने देखा /उसे तोड़ती पथर

किसी निगम के सरकारी अक्षर /लेकिन उसका नाम नहीं है I ”¹⁴

इसी प्रकार की पंक्तियाँ हम निराला जी की कविता 'तोड़ती पथर' में देख सकते हैं I निराला जी भी जनता के पक्षधर हैं, उन्होंने भी लोक कल्याण के लिए कविताओं का सृजन किया I बेदी जी का काव्य किसी एक विचार को लेकर नहीं रचा गया है, अपितु इसमें लोक के हर पक्ष को रखा गया है I साथ ही साथ अंतर्जगत को भी आधार बनाया गया है I

निष्कर्ष : डॉ. हरमहेंद्र सिंह बेदी जी बहुआयामी प्रतिभा के धनी रचनाकार हैं I उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं का सर्जन किया है, इन्होंने हिंदी और पंजाबी में रचनायें की हैं I उन्होंने कविताओं को लिखा ही नहीं अपितु जिया भी है, इसलिए इन्हें समकालीन कविता के हस्ताक्षर माना गया है I बेदी जी लोक-जीवन और आंतरिक जगत के पारखी हैं, जो की इनकी कविताओं में दिखाई पड़ता है I इनकी प्रत्येक कविता अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखती है I कहीं इनकी रचनाओं में मनुष्य का बाहरी संघर्ष दिखाई देता है, तो कहीं अपने अस्तित्व के खोज का संघर्ष है I जीवन में एक विचार भी क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है I बेदी जी की कविताओं का स्पर्श पाते ही पाठक का हृदय उदात्त भावनाओं के प्रकाश से भर जाता है I इनकी कविताओं को पढ़ कर पाठक की चेतना को झकझोर कर बहुत से प्रश्नों को सामने उठाती हैं I और इन्हीं कविताओं के माध्यम से उन समस्याओं का समाधान भी मिलता है I बेदी जी की कविताओं को पढ़ के उज्ज्वल भविष्य की कामना की जा सकती है I इनकी कविताओं को पढ़ने से जीवन रहस्य को समझने का द्वार खुलता है I

संदर्भ :

1. चिंतामणि भाग -1 :आचार्य राम चन्द्र शुक्ल, पृष्ठ स.107, प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली, संस्करण 2023.
2. विकिपीडिया, एक मुक्त ज्ञान कोष से I
3. मौन में व्रत: डॉ. हरमहेंद्र सिंह बेदी, पृष्ठस.12, समृद्ध पब्लिकेशन शाहदरा, दिल्ली, संस्करण 2023 .
4. कविता के नए प्रतिमान: नामवर सिंह, पृष्ठ स.221, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 1968.
5. मौन में व्रत: डॉ. हरमहेंद्र सिंह बेदी, पृष्ठस.13, समृद्ध पब्लिकेशन शाहदरा, दिल्ली, संस्करण 2023 .
6. पानी का सपना: डॉ. हरमहेंद्र सिंह बेदी, पृष्ठ स.63, समृद्ध पब्लिकेशन शाहदरा, दिल्ली, संस्करण 2023 .
7. हरमहेंद्र सिंह बेदी रचनावली(खण्ड -2): प्रोफेसर रामसजन पाण्डेय, पृष्ठ स.37, निर्मल पब्लिकेशन, संस्करण 2019
8. लहर लहर कविता : डॉ. हरमहेंद्र सिंह बेदी, पृष्ठ स.20, प्रकाशन इंडिया नेटबुकस, संस्करण 2020.
9. अनुबंध के भोजपत्र : डॉ. हरमहेंद्र सिंह बेदी, पृष्ठ स.47, बोधि प्रकाशन, संस्करण 2021.
10. अनुबंध के भोजपत्र : डॉ. हरमहेंद्र सिंह बेदी, पृष्ठ स.55, बोधि प्रकाशन, संस्करण 2021.
11. मौनमेव्रत: डॉ. हरमहेंद्र सिंह बेदी, पृष्ठस.38, समृद्ध पब्लिकेशन शाहदरा, दिल्ली, संस्करण 2023 .
12. मौनमेव्रत: डॉ. हरमहेंद्र सिंह बेदी, पृष्ठस.37, समृद्ध पब्लिकेशन शाहदरा, दिल्ली संस्करण 2023 .
13. हरमहेंद्र सिंह बेदी रचनावली(खण्ड -2): प्रोफेसर रामसजन पाण्डेय, पृष्ठ स.102 ., निर्मल पब्लिकेशन, संस्करण 2019
14. हरमहेंद्र सिंह बेदी रचनावली(खण्ड -2): प्रोफेसर रामसजन पाण्डेय, पृष्ठ स.106, निर्मल पब्लिकेशन, संस्करण 2019.

दौसा जिले के प्रमुख संत और उनका साहित्य

डॉ. शीतल प्रसाद महेन्द्रा

सह आचार्य

राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय
बाँदरसिंदरी (किशनगढ़) अजमेर

दौसा, कहते हैं यह नाम संस्कृत शब्द "धौ-सा" अर्थात "स्वर्ग जैसा सुंदर" पर रखा गया है। इस बेहद प्राचीन शहर को "देव नगरी" के नाम से भी जाना जाता है। दौसा जयपुर से पूर्व की ओर लगभग 55 किमी दूर नेशनल हाईवे-21 पर स्थित है। दौसा को 7 वीं शताब्दी राजा सोडदेव ने बसाया था उसके बाद इस परंपरा को दलेराय ने आगे बढ़ाया। यह शहर कछवाहा राजवंश का पहला मुख्यालय था इसके पश्चात दलेराय ने आमेर पर आक्रमण कर उसे अपनी राजधानी बनाया। इस शहर से इतिहास और पुरातात्विक महत्व बहुत सारा जुड़ा हुआ है। कई पुराने महलों की खूबसूरती समेटे दौसा पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र है। दौसा शहर की चारों दिशाओं एवं एक पहाड़ पर कुल पांच शिवालय है—नीलकंठ महादेव (पहाड़ पर), सोमनाथ महादेव, वैजनाथ महादेव, सहजनाथ महादेव, गुप्तिश्वर महादेव। क्षेत्रफल की दृष्टि से दौसा जिला राजस्थान के छोटे जिलों में से एक है। जिले का आकार मोटे तौर पर अर्ध-गोलाकार या सी-आकार का है, जो केंद्र में चौड़ा है और पूर्व और पश्चिम की ओर पतला है। भौतिक रूप से भूभाग का अधिकांश भाग उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम तक चलने वाली अरावली पहाड़ियों की कई श्रेणियों के साथ समतल है। जिले की पहाड़ियाँ उत्तरी अरावली पर्वतमाला के भाग या शाखाएँ हैं। यह अरावली ही यहाँ संतों के आकर्षण का कारण है इसकी हर कन्दरा में कोई न कोई साधु साधना में लीन है।

दौसा ना सिर्फ अपने राजाओं, संतों बल्कि स्वतंत्रता सेनानियों के लिए भी जाना जाता है। स्वर्गीय टीकाराम पालीवाल और स्वर्गीय राम करण जोशी उन स्वतंत्रता सेनानियों में शामिल हैं, जिन्होंने आजादी की लड़ाई से लेकर राजस्थान राज्य के गठन के लिए रियासतों के एकीकरण में अपना बहुमूल्य योगदान दिया था। स्वतंत्रता के बाद साल 1952 में स्वर्गीय टीकाराम पालीवाल राजस्थान के पहले निर्वाचित मुख्यमंत्री और स्वर्गीय राम करण जोशी प्रदेश के पहले पंचायती राज मंत्री थे।

दौसा जिले से संबंधित प्रमुख संत और उनका साहित्य

जगजीवन दास महाराज- संत श्री जगजीवन दास महाराज का जन्म उत्तर प्रदेश में 1612 ई. के लगभग माना जाता है। इनका जन्म सरहदा गांव जो बाराबंकी के जिले में सरयू नदी के किनारे कोटवा से दो कोस की दूरी पर हुआ था। जानकारी के अनुसार इनका जन्म चन्देल क्षत्रिय परिवार में हुआ था, संत जगजीवन दास बचपन से ही गंभीर स्वभाव के थे। संत समागम और कीर्तन-कार्यक्रम में वे बड़े उत्साह से हिस्सा लेते थे। जगजीवन दास जी महाराज संवत् 1640 में दौसा आए थे। वहीं संवत् 1647 में संत श्री दाद दयाल महाराज दौसा में आए थे। जगजीवन दास महाराज ने संत श्री दाद दयाल महाराज को गुरु बनाया और बैराठ आमेर में दीक्षा प्राप्त की। दाद दयाल के 152 शिष्य थे जिनमें 100 गृहस्थ थे और 52 साधु थे। जो दाद पंथ के 52 स्तम्भ कहलाए। इनके प्रमुख शिष्य जगजीवन दास महाराज माने जाते हैं।

मंहत केशव देव स्वामी के अनुसार संत श्री जगजीवन दास महाराज दौसा में 40 वर्ष तपस्या की और उसके बाद में संवत् 1694